इकाई 6 पूंजीवाद और उदार लोकतंत्र का विचार

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय

6.2 पूंजीवाद के ऐतिहासिक तटबंध और उदार लोकतंत्र

6.3 पूंजीवाद और उदार लोकतंत्र क्या है?

6.4 उदारवादी लोकतंत्र और पूंजीवाद के बीच अंतर्संबंध

6.5 प्रतियोगिता, तर्क–वितर्क और पूंजीवाद और उदारवादी लोकतंत्र का भविष्य

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

लोतंत्र और पूँजीवाद आधुनिक काल के उन्नतिशील विचार हैं। इस इकाई का उद्देश्य आपको लोकतंत्र के विचारों से, पूँजीवाद के विचारों से और इन दोनों विचारों के बीच के अंतर–संबंधों से परिचित कराना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित में सक्षम हो जाएँगेः

- उदार लोकतंत्र और पूँजीवाद के विचारों की व्याख्या करने में;
- उनके बदलते स्वभाव को और उनके बीच के अंतर–संबंधों को स्पष्ट कर पाने में;
- समकालीन समय में इन दोनों विचारों द्वारा सामना किए जाने वाली चुनौतियों पर चर्चा करने में

6.1 परिचय

उदार लोकतंत्र और पूँजीवाद आंतरायिक चुनौतियों के बावजूद सबसे सफल राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली साबित हुए हैं। यह इकाई उदार लोकतंत्र और पूँजीवाद विभिन्न आयामों पर चर्चा करती है तथा यह उस अर्थ के योगदान को संपुटित करता है जो ये एक दूसरे के लिए करते हैं। मौलिक रूप से, लोकतंत्र आम लोगों के लिए किए जाने वाली अच्छाई मनाता है और पूँजीवाद व्यक्तिगत भलाई मनाता है। पूँजीवाद असमान संपत्ति अधिकारों के तर्क का अनुसरण करता है जबकि लोकतंत्र का उद्देश्य सबको एक समान नागरिक और राजनीतिक अधिकार देना है। लोकतांत्रिक राजनीति सहमति ओर समझौते में अंतःस्थापित है और पूँजीवाद सभी पदानुक्रमित निर्णय लेने के बारे में है। वुल्फगैंग मर्केल, जो कि लोकतंत्र के विशेषज्ञ हैं, उन्होंने कहा कि पूँजीवाद लोकतांत्रिक नहीं है, लोकतंत्र पूँजीवादी नहीं हैं।

6.2 पूंजीवाद के ऐतिहासिक तटबंध और उदार लोकतंत्र

चूंकि पूँजीवाद एक विचार के रूप में या एक दृष्टिकोण के रूप में हमेशा अपने आदिम अवतार में मौजूद होना चाहिए, पूँजीवाद के आरंभिक चिन्हों की ओर संकेत पाना मुश्किल है। मनुष्य की विकास–यात्रा इस बात की द्योतक है कि प्राकृतिक मनुष्य अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यस्त हो गया और उसने धीरे–धीरे पूँजी/संसाधनों को जमा करना सीखा तथा उद्यम और पूँजी को अप्राप्य धन में बदलने के अनुमान की कला के महत्व को समझा। हालांकि, एक प्रणाली के रूप में पूँजीवाद का विकास 16वीं शताब्दी में शुरू हुआ। पूँजीवाद के जिस औद्योगिक रूप से हम परिचित हैं वह पहली बार इंग्लैंड में 18वीं शताब्दी में विकसित हुआ और यूरोप, उत्तरी अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा दक्षिण अफ्रीका के अन्य भागों में फैल गया। 19वीं शताब्दी के अंत तक, यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के विस्तार के साथ, पूँजीवाद पूरे विश्व पर हावी हो गया।

इस बात की ओर संकेत किया गया कि पूँजीवाद का उदय तीन मुख्य विशेषताओं से जुड़ा हुआ हैः (1) पूँजीवादी भावना की संवृद्धि अर्थात् लाभ की इच्छा, (2) पूँजी का संचय, और (3) पूँजीवादी तकनीकों का विकास। मैक्स वेबर का मानना था कि पूँजीवाद बुद्धिसंगत व्याख्या और तार्किकता का उत्पाद था जो कि आधुनिकता का एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण था। इस प्रकार पूँजीवाद उत्पादक उद्यम का एक तर्कसंगत संगठन था। वेतन वाले कर्मचारी या श्रमिक की अवधारणा ने, जो औद्योगिक क्रांति के बाद उभरा, पूँजीवाद के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण का संकेत दिया। औद्योगिक क्रांति से पूर्व की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के इतिहास पर एक संक्षिप्त नज़र डालने से पता चलता है कि पूँजीवाद न तो कुछ आविष्कारकों के प्रयासों से उत्पन्न हुआ, जो औद्योगिक क्रांति का कारण बने और न ही ब्रिटिश पूँजीवादियों में कुछ विशेष 'उद्यमी भावना' थी। यह सामंतवाद की सामाजिक और आर्थिक प्रणाली की व्यवस्था के टूटने से और उसके स्थान पर वेतन–श्रम प्रणाली लागू होने से उत्पन्न हुआ। कार्ल मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था के विकास का ऐतिहासिक और द्वंद्वात्मक विश्लेषण किया तथा इसे पहले सामंती क्रम के अंदर मिलनेवाले विरोधाभासों की उपज माना जाता है। उन्होंने कहा कि पूँजीवाद इतिहास में एक ऐसा चरण था जिसने सामंतवाद की जगह ले ली और इस तरह से सामंतों पर सामंती प्रभुओं का नियंत्रण समाप्त हो गया। गुलामों को कारखाने के कामगारों के रूप में अवशोषित कर लिया गया, यानि कि, बड़े पैमाने पर उत्पादन की नई प्रणाली में मजदूरी करने वाले वेतनभोगी मजदूर इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था की पकड़ पूरी तरह से स्थापित हो गई। मार्क्स ने कहा कि पूँजीवाद जैसे ही अपनी उच्च श्रेणी स्तर पर पहुँचेगा वह अपने अंतर्निहित अंतर्विरोधों के कारण से टुट जाएगा तथा एक सर्वहारा वर्ग की क्रांति द्वारा उखाड़ फेंका जाएगा। हालाँकि, इस तरह की एक श्रमिक वर्ग की क्रांति केवल अविकसित रूस की स्थापना करने के लिए हुई, जिसकी बाद में राज्य के पूँजीवाद की आलोचना की जाने लगी। जब कम्युनिस्ट गुट का विघटन और पतन हुआ, तो फ्रांसिस फुकायामा, एक अमरीकी राजनीतिक सिद्धांतकार ने उनकी किताब, एन्ड ऑफ हिस्ट्री एंड दी लास्ट मैन में लिखा कि, मानव जाति वैचारिक विकास के अंतिम बिंदु पर पहुँच गई है। सोवियत रूस में साम्यवाद के पतन ने उदार लोकतंत्र

और पूँजीवाद की विजय का संकेत दिया। अगले कुछ वर्षों में, नवउदारवादी विचारों से प्रभावित अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों द्वारा प्राप्त सहायता से उदारवादी बाजारों ने वैश्विक पूँजीवाद का मार्ग प्रशस्त किया। हालांकि, 2008 के हालिया वैश्विक वित्तीय संकट ने समाविष्ट बाजारों के पक्ष में, वैश्वीकरण को वापस लेने और पुनर्वितरण नीतियों को बढ़ावा देने के लिए गति प्रदान की। फुकायामा ने अपने कथन पर फिर से सोचना शुरू किया और आय और संपत्ति में भारी असंतुलन का दूर करने के लिए पुनर्वितरण कार्यक्रम आमंत्रित किया।

लोकतंत्र को आज सफल राजनीतिक प्रणालियों में से एक के रूप में मनाया जाता है, जिसमें व्यावहारिक रूप से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। इसका आधारभूत अर्थ है सरकार का एक अभिरूप जिसमें निर्णय लोगों के द्वारा, लोगों के लिए और लोगों का होता है। बहरहाल, लोकतंत्र के असंख्य रूप और प्रकार हैं। आमतौर पर, लोकतंत्र की ऐतिहासिक जड़ें प्राचीन यूनानी शहरों एथेंस और स्पार्टा तक पहुँचती है, जहाँ शहर की विधानसभा में लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता था। उसके साथ साथ, यूनानी लोकतंत्र की रूपरेखा समस्याग्रस्त भी थी। यह महिलाओं, मेटिक्स्(विदेशी निवासी) और दासों को प्रणाली के वैध प्रतिभागियों के रूप में मान्यता नहीं देता था। हाल के वर्षों में, विचार कि, लोकतंत्र अनिवार्य रूप से एक प्रणाली है जिसकी उत्पत्ति पश्चिमी विश्व में हुई थी और प्रतियोगी के रूप वैदिक साहित्य में सभा और समिति के अभ्यास का संदर्भ लेता है, जहाँ लोग निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेते थे, गैर–पश्चिमी विश्व में भी इस तरह की व्यवस्था का संदर्भ मिला।

उदार लोकतंत्र को विशेष रूप से एक उत्पाद और आधुनिकता की विशेषता के रूप में माना जाता है। शाही निपेक्षता के खिलाफ गृहयुद्ध के परिणामस्वरूप यह अस्तित्व में आया और क्राउन(राजशाही) से संसद में शक्तियों के हस्तांतरण का मार्ग प्रशस्त किया। तब से, उदार लोतंत्र का न केवल भौतिक रूप से विस्तार हुआ, बल्कि उसके अर्थ के संदर्भ में भी परिपक्व हुआ है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से औद्योगिक पूँजीवाद के विकास के साथ अमरीकी और फ्रांसिसी क्रांतियों ने लोकतंत्र की जड़ों को मज़बूत किया है। लोकतंत्र के विकास में विशेष रूप से उसकी उदारता के अर्थों में, फ्रांसिसियों की मानव अधिकारों की घोषणा(1789), अमरीका की स्वतंत्रता की घोषणा(1776), जॉन लॉक जिसने मनुष्य के अयोग्य अधिकारों का विचार उत्पन्न किया, के राजनीतिक विचारों ने, बेंथम की प्रतिनिधि राजनीति के बचाव ने, जे.एस.मिल का महिलाओं के मताधिकार का समर्थन, ने बहुत योगदान दिया है। लोकतंत्र ने न केवल एक विचार के रूप में, बल्कि विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तरों, सार्वजनिक शिक्षा और चुनाव सुधारों से संबंधित, जनसंख्या के क्रमिक उत्थान के साथ एक राजनीतिक प्रणाली के रूप में भी बहुत प्रगति की। विश्व की राजनैतिक स्वतंत्रता तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में नए स्वतंत्र हुए देशों द्वारा आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए किए गए दावों ने भी दुनिया के लोकतंत्रीकरण में योगदान दिया।

हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि लोकतंत्र शब्द से पहले विशेषण 'उदार' व्यक्तिगत स्वतंत्रता, राज्य की भूमिका और बाज़ार की भूमिका के एक विशिष्ट अर्थ और परिभाषा को दर्शाता है। लोकतंत्र की उदार समझ अधिक व्यक्तिगत अधिकारों और राज्य के कम हस्तक्षेप के पक्ष में रही है। उदारवादी

शब्द के दो विपरीत अर्थ हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, इसका अर्थ अंकुश की अनुपस्थिति (नकारात्मक स्वतंत्रता) हो सकती है अथवा इसका अर्थ हो सकता है शासन और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्बद्ध होने की व्यक्ति की क्षमता। इस प्रकार, स्वतंत्रता/व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राज्य की भूमिका के विचार के लिए अपनाए गए अर्थ और परिभाषा के आधार पर लोकतंत्र के विभिन्न संस्करण हैं। उदाहरण के लिए, उदार लोकतंत्र जो कि श्रमिक वर्ग के हितों को प्राथमिकता देता है और व्यक्तिगत/निजी स्वामित्व पर सीमा नियंत्रण का प्रयोग करता है उसे समाजवादी लोकतंत्र माना जा सकता है जबकि जो व्यक्ति की स्वतंत्रता के आनंद से परे समाज के प्रति कर्तव्यों, जिम्मेदारियों और दायित्वों को वरीयता देते हैं, उन्हें कम्युनिस्ट लोकतंत्र माना जा सकता है। और, यदि कोई राजनीतिक प्रणाली पर्यावरण संबंधी चिंताओं या महिलाओं/लिंग से संबंधित चिंताओं को प्राथमिकता देना चाहती है तो ऐसी प्रणालियों में पर्यावरण की ओर और नारीवाद की ओर झुकाव देखा जा सकता है।

6.3 पूंजीवाद और उदार लोकतंत्र क्या है?

आधुनिक अर्थशास्त्र का मैकमिलन शब्दकोष की परिभाषा अनुसार पूँजीवाद, एक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रणाली है जिसमें पूँजीगत संपत्ति सहित संपत्ति का अधिकांश भाग निजी व्यक्तियों के स्वामित्व और नियंत्रण में होता है। पूँजीवाद निश्चित रूप से एक आर्थिक प्रणाली है जो व्यक्तिगत उद्यमों के लाभ से चालित है। यह निजी स्वामित्व, असंबद्ध स्वतंत्रता, संविदात्मक लेनदेन और आर्थिक प्रतिस्पर्धा के लिए अधिक स्थान की मांग करता है। दूसरे शब्दों में, पूँजीवाद एक ऐसी प्रणाली है जिसमें किसी समाज के संसाधनों का आवंटन मूल्य तंत्र पर आधारित होता है। पूँजीवाद के विभिन्न रूपों में अंतर, मूल्य तंत्र के उपयोग की हद, बाज़ारों में प्रतिस्पर्धा का स्तर और सरकारी हस्तक्षेप का स्तर, तय करते हैं। अपने चरम रूप 'लैस्से फ्येरे' मॉडल(अक्षरशः अर्थ – हमें अकेला छोड़ दें) में, पूँजीवाद सरकारी नियंत्रण और विनियमन के प्रत्येक रूप की उपेक्षा करता है। इस प्रकार की मुक्त बाजार प्रणाली को यदि नियंत्रित और उसकी निगरानी न की जाए, तो वह सबसे क्रूर और बेईमान प्रणालियों में परिवर्तित हो जाती है। पूँजीवाद भी आर्थिक संबंधों के लिए अप्रत्यक्ष शासन की एक प्रणाली है, जहाँ सभी बाज़ार संस्थागत ढ़ांचे के अंदर मौजूद होते हैं जो राजनीतिक अधिकारियों अर्थात (स्कॉट 2006) द्वारा प्रदान किए जाते हैं। इस दृष्टिकोण से, पूँजीवाद किसी भी अन्य संगठित खेल की तरह तीन–स्तरीय प्रणाली है। बाजार प्रथम स्तर पर अधिकार जमाते हैं जहाँ प्रतियोगिता होती है; संस्थागत प्रतिष्ठान (प्रशासनिक और नियामक बुनियादी ढ़ाँचा) जो उन बाजारों को रेखांकित करते हैं वे दूसरे स्तर पर, तथा राजनीतिक प्राधिकरण जो खेल के नियम बनाता है और व्यवस्था को प्रशासित करता है वह तीसरे स्तर पर आता है। दूसरे शब्दों में, समय के माध्यम से प्रभावी विकासात्मक अर्थों में विकसित होने वाली पूँजीवादी व्यवस्था के दो हाथ होने चाहिए, एक नहीं: एक अदृश्य हाथ जो कि मूल्य निर्धारण तंत्र में निहित है और एक दृश्यमान हाथ है जिसे स्पष्ट रूप से सरकार द्वारा विधायिका और नौकरशाही के माध्यम से प्रबंधित किया जाता है।

मैक्स वेबर के अनुसार, पूँजीवादी तर्कसंगत ओर व्यवस्थित रूप से लाभ कमाने का एक दृष्टिकोण है। इसलिए, आर्थिक प्रणाली का यह रूप संसाधनों के निजी स्वामित्व, उत्पादन और वितरण की तर्कसंगत तकनीकों , मुक्त बाजार, मुक्त श्रम शक्ति, अर्थव्यवस्था के व्यावसायीकरण और तर्कसंगत कानून पर पनपता है। दूसरी ओर, कार्ल मार्क्स पूँजीवाद को एक ऐसे प्रगतिशील ऐतिहासिक मंच के रूप में देखते हैं, जिसका अपने आंतरिक विरोधाभासों के भार से ही टूटना तय है। मार्क्स के लिए पूँजीवाद, तीव्र शोषण, वर्ग विभाजन, असमानता और उत्पीड़न की एक प्रणाली है। पूँजीवाद निजी संपत्ति, लाभ के लिए कारखाने प्रणाली के तहत वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन और श्रमिक वर्ग के अस्तित्व पर पनपता है। यह श्रमिक वर्ग अपनी अपनी श्रम शकित को बाजार में बंचने के लिए मजबूर किया जाता है, और अंततः, यह होने(उत्पादन के साधनों के मालिक या पूँजीपति) और न होने (मजदूरी करने वाले या सर्वहारा वर्ग) के बीच के ध्रुवीकरण का कारण बनती है। मार्क्स का कहना है कि उदार लोकतंत्र में सरकार पूँजीवादी वर्ग की कार्यकारी संस्था के रूप में कार्य करती है। पूँजीपति वर्ग के हाथों में आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का ये विलयन सर्वहारा वर्ग के शोषण का कारण बनता है। उनका मानना था कि, जब सर्वहारा वर्ग लड़ने के लिए एकजुट हो जाते हैं तो, उदारवादी लोकतंत्र और पूँजीवाद दोनों एक कम्युनिस्ट समाज की स्थापना के लिए उखाड़ फेंके जाते हैं। इसप्रकार, मार्क्स के अनुसार, पूँजीवाद और लोकतंत्र सर्वहारा वर्ग के शोषण के पीछे के प्रमुख कारक हैं।

इस प्रकार पूँजीवाद को उद्यम की भावना, उत्पादन की एक विशेष विधि और एक वाणिज्यिक प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। पूँजीवाद को काम करने के लिए, एक नियमबद्ध आर्थिक नीति, संवैधानिक रूप से सुनिश्चित की गई बाज़ारों की सुरक्षा तथा विवेकाधीन राजनीतिक हस्तक्षेप से संपत्ति के अधिकार, स्वतंत्र नियामक प्राधिकरण, चुनावी दबाव से सुरक्षित केंद्रीय बैंकों तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की आवश्यकता होती है(स्ट्रीक, 2011)। यामामूरा और स्ट्रीक दो प्रकार के पूँजीवाद के बारे में बात करते हैं; गैर–उदारवादी और उदारवादी पूँजीवाद। वे इन शब्दों का उपयोग विशेष अर्थव्यवस्थाओं में सामाजिक ओर राजनीतिक विनियमन की सीमाएँ बतलाने तथा अधिकतर मौलिक रूप से, 'जिस तरह से राष्ट्रीय समाज अपनी अर्थव्यवस्थाओं को व्यवस्थित करने और वास्तव में जिस हद तक वे ऐसा करते हैं' के लिए करते हैं।

लोकतंत्र मूलतः सहमति से बनी सरकार है जिसमें आवधिक, प्रतिस्पर्धी, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव अनिवार्य हैं। चुनाव प्रमुख संस्थागत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोकतंत्र कार्य करता है। नागरिकों /शासितों का मत एक लोकतांत्रिक प्रणाली में सर्वोपरि है। सर्वसम्मति–निर्माण की प्रक्रिया उदार लोकतांत्रिक प्रक्रिया के केंद्र में है। डेविड ईस्टन के अनुसार ऐसी सहमति को तीन स्तरों पर उपार्जित करने की आवश्यकता है। (ए) समुदाय स्तर पर आम सहमति (बुनियादी सर्वसम्मति); (बी) शासन स्तर पर आम सहमति (प्रक्रियात्मक सर्वसम्मति), तथा (सी) नीति स्तर पर आम सहमति (नीति सर्वसम्मति)। सर्तोरी कहते हैं कि, लोकतंत्र में, कोई भी शर्त रहित और असीमित शक्ति का उपभोग नहीं कर सकता। शक्ति का सीमित प्रयोग और जवाबदेही लोकतंत्र के प्रमुख तत्व हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्तिवाद, लोकप्रिय संप्रभुता और सीमित सरकार उदार लोकतंत्र की नींव है।

लोकतंत्र को और स्पष्ट करने के लिए, लोकतंत्र के प्रक्रियात्मक पहलुओं के साथ–साथ मूलभूत पहलुओं को समझना आवश्यक है। प्रक्रियात्मक पहलू संवैधानिक ढ़ांचे पर केंद्रित होते हैं, जबकि लोकतंत्र के मूलभूत पहलू हमें विकास और विकास के फलों के समान वितरण के लिए प्रयास करना याद दिलाते हैं। उदार लोकतंत्रों के उदारवादी लोकतंत्र होने का दावा इस दावे पर टिका हुआ है कि उनके पास व्यक्तिगत नागरिकों की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए दोनों अच्छी प्रकार से स्थापित और सुलभ प्रक्रियाएँ हैं (वेयर, 1992)। उदार लोकतांत्रिक प्रक्षेपपथ यह भी प्रकट करता है कि स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्य इसके निर्माण खंड हैं। ये मूल्य ही लोकतंत्र के प्रक्रियात्मक पहलू को मजबूत बनाते हैं तथा संसाधनों पर समान रूप से पुनर्वितरण के प्रयासों को सुनिश्चित करने वाले बाजारों पर अनुशासित नियंत्रण में योगदान देता है। उदार लोकतंत्र के दो महत्वपूर्ण घटक हैं – उदारवादी घटक जो राजनीतिक शक्ति पर लगाम की बात करते हैं और लोकतांत्रिक घटक जो लोगों के शासन, भागीदारी और प्रतिनिधि संस्थानों से संबंधित हैं। उदारवाद का अर्थ लोगों को मुक्त करना है और लोकतंत्र 'लोगों को सशक्त बनाने' के लिए खड़ा है। इसका अर्थ अत्याचार ओर मनमानी से लोगों की रक्षा करना भी है। यह लोगों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। लोकतांत्रिक समाज में लोगों को यह प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए राजनीतिक दल महत्वपूर्ण माध्यम होते हैं। प्रतिनिधित्व का रूप प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, अनुपातिक आदि हो सकता है। प्रत्येक समाज में विभिन्न प्रकार की पार्टी प्रणालियाँ होती हैं जो उस समाज की जनसंख्या की प्रकृति और संरचना पर निर्भर करती हैं। उदाहरण के लिए, किसी अधिक सजातीय समाज में दो–पक्षीय प्रणाली होती है और एक विषम समाज में बहु–पक्षीय प्रणाली होती है। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्यों को एक उदार लोकतांत्रिक समाज के मौलिक मूल्य माना जाता है। दूसरी ओर, उदार लोकतंत्र से मुक्त बाजार और संपत्ति के अधिकार अविभाज्य हैं। उदारवादी लोकतंत्र की मार्क्सवादी आलोचना इस कारण से है कि आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक समानता दूरगामी होती है। निजी संपत्ति को समाप्त करके, वर्ग विभाजन को समाप्त करना होगा, जो पूँजीवाद की एक अंतर्निहित विशेषता है। समाजवादी लोकतंत्र का उद्देश्य अनिवार्य रूप से पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना है जिसे उदारवादी लोकतंत्र से शक्ति मिलती है। उदारवादी लोकतंत्र की आलोचना गालानो मोस्का, विल्फ्रेडो परेतो और रॉबर्ट मिशेल जैसे संभ्रांत सिद्धांतकारों द्वारा भी की जाती है जो इस ओर इशारा करते हैं कि उदारवादी लोकतंत्र में बड़े पैमाने पर लोगों के बजाय किसी समाज में कुछ संभ्रांत लोग शासन करते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोटः 1) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

2) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) मैक्स वेबर के अनुसार, पूँजीवाद के लिए आवश्यक शर्तें कौन सी हैं?

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित में से कौन सी शर्त उदार लोकतंत्र के लिए आवश्यक नहीं है?

ए) व्यक्तिवाद ; बी) लोकप्रिय संप्रभुता; सी) लाइसे फेयर और डी) सीमित सरकार

6.4 उदारवादी लोकतंत्र और पूंजीवाद के बीच अंतर्संबंध

अर्थव्यवस्था और राजव्यवस्था मानव समाज के मुख्य समस्या समाधान तंत्र हैं। उन प्रत्येक के अपने विशिष्ट साधन होते हैं, और उनमें से प्रत्येक का अपना 'अच्छा' या अंत होता है। वे आवश्यक रूप से एक दूसरे से परस्पर प्रभावित रहते हैं और इस प्रक्रिया में एक दूसरे में बदलाव ले आते हैं।(एल्मंड, 1991)। एक प्रश्न जो हमें कचोटता है कि पूँजीवाद और लोकतंत्र, जो एक दूसरे से कई प्रकार से विपरीत विचारों के हैं, कैसे दुनिया भर में एक दूसरे के पूरक बन कर सामने आ रहे हैं। पहला असमान असमानताएँ पैदा करता है तथा दूसरा समान राजनीतिक अधिकारों के वितरण के माध्यम से एक समतावादी समाज को तैयार करता है। एक तरफ, ऐसी प्रणाली है जो मुक्त बाज़ार को बढ़ावा देती है और दूसरी ओर ऐसी प्रणाली है जो एक पुनर्वितरण कल्याणकारी राज्य के लिए तरसती है। 1970 के दशक के बाद से बढ़ती मुद्रास्फीति, निजी ऋणग्रस्तता, वित्तीय संकट ने सुरक्षा के लिए बढ़ती मांगों (सरकार द्वारा वित्त पोषित सामाजिक कार्यक्रम, प्रगतिशील कराधान के माध्यम से आय और धन का पुनर्वितरण) के बीच संघर्ष को उजागर किया है जो बाजार के साथ मूलभूत रूप से असंगत है। इन दोनों विचारों के ऐतिहासिक विकास और इसके अभ्यास के बारे में विस्तृत जाँच से पता चलता है कि वे दोनों अपने विरोधाभासी स्वभाव का जवाब देने में कामयाब रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के कल्याणकारी राज्यों के समझौते ने एक अनियमित पूँजीवादी बाजार के परिणामस्वरूप बढ़ती असमानताओं को कम करने की कोशिश की। बाद में, 1970 के दशक में वित्तीय संकट (ब्रेटेन वुड्स) की शुरूआत ने 1980 के दशक के बाद से भूमंडलीकरण, नव–उदारवादी सुधारों के विस्तार क्षितिज को जन्म दिया। इससे कल्याणकारी राज्य के विचार में सेंध लग गई। जबकि राज्य नष्ट नहीं हुआ, उसने पूँजीवाद के वैश्वीकरण के लिए पर्याप्त जगह बनाई। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि लोकतांत्रिक राजनीति में एक प्रकार से 'उदार' की मात्रा और प्रकृति एक निर्धारित प्रणाली/समाज के तहत पूँजीवाद के स्थान और संरचना का निर्धारण करती है। उदाहरण के लिए, सरकारें जो संरक्षण और पुनर्वितरण के लोकतांत्रिक दावों पर ध्यान देने में विफल हो जाती हैं उनको अपनी बहुमत की हानि होने का जोखिम होता है जबकि सरकारें जो उत्पादन के संसाधनों के मालिकों से मुआवजे के दावों की अवहेलना करतीं हैं, जैसा कि सीमांत उत्पादकता की भाषा में व्यक्त किया गया है, अर्थिक दुष्क्रिया और विकृतियों का करण बनती है जो तेजी से अस्थिरता की ओर जाती है और इससे राजनीतिक समर्थन भी कमजोर होता है (स्ट्रीक, 2011)।

मार्क्स का मानना था कि पूँजीवाद इसलिए पनपता है क्योंकि सर्वहारा वर्ग का दमन किया जाता है और उसे गलत जानकारियाँ दी जाती है। अपने अंतर्विरोधों के भार तले पूँजीवादी व्यवस्था के पतन की उनकी धारणा अब सही नहीं बैठती क्योंकि पूँजीवाद ने उदारवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंदर खुद को ढ़ालकर और समायोजित करके इन चुनौतियों से बचा लिया है। वास्तव में, आज

पूँजीपति वर्ग लोकतंत्र और नियंत्रण के लिए पुनर्वितरण हेतु अपनी सहमति देती है जिसके परिणामस्वरूप क्रांति का खतरा बढ़ जाता है।

पूँजीवाद और लोकतंत्र के बीच के अंतर्संबंधों के अवलोकन के लिए विभिन्न धारणाएँ, सिद्धांत और दृष्टिकोण हैं। उदाहरण के लिए, चूंकि औसत मतदाता निम्न आय वर्ग के हैं इसलिए अधिक लोकतंत्रीकरण का परिणाम अधिक पुनर्वितरण होता है (मेल्टज़र एंड रिचर्ड मॉडल 1981)। हालांकि, वे विभिन्न देशों में देखी गई पुनर्वितरण की राजनीति में भिन्नता को समझाने से लाभ नहीं मिलता। पूँजीवाद और लोकतंत्र के अध्ययन के लिए अन्य मुख्य दृष्टिकोण राजनीतिक शक्ति की भूमिका पर केन्द्रित होते हैं, विशेषरूप श्रम की संगठनात्मक और राजनीतिक ताकत। यदि पूँजीवाद वर्ग संघर्ष के बारे में होता है, तो वर्गों के संगठन और अंतरंग राजनीतिक ताकत, नीतियों और आर्थिक परिणामों को प्रभावित करती है। इस दृष्टिकोण के दो संस्करण हैं। शक्ति संसाधन सिद्धांत कल्याणकारी राज्य के आकार और संरचना पर ध्यान केद्रिंत करता है, इसे मध्य वर्ग के साथ गठबंधनों द्वारा मध्यस्तता करते हुए राजनीतिक वाम की ऐतिहासिक ताकत के प्रकार्य के रूप में समझा जाता है। दूसरे संस्करण को नियो कॉरपोरेटवादी सिद्धांत कहा जाता है जो श्रम के संगठन और राज्य के साथ उसके संबंधों पर केद्रिंत होता है – विशेष रूप से यूनियनों के केंद्रीकरण की डिग्री और सार्वतनिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनके समावेश (आइवरसन, 2006)।

जोसफ शम्पेटर का कहना है कि लोकतंत्र पूँजीवाद की सभ्यता की कहानी काएक भाग है, इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लोकतंत्र ऐतिहासिक रूप से पूँजीवाद द्वारा समर्थित था। पूँजीवाद, समाजवाद और लोकतंत्र (1942) के बारे में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि, 'इतिहास स्पष्ट रूप से पुष्टि करता है कि आधुनिक लोकतंत्र पूँजीवाद के साथ–साथ बढ़ा है और इनका आपस में नैमित्तिक संयोजन है। आधुनिक लोकतंत्र पूँजीवादी प्रक्रिया का एक उत्पाद है'। हालांकि, पूँजीवाद और उदार लोकतंत्र का विकास संघर्षपूर्ण रहा है, इसने विशेषरूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत और कल्याणकारी राज्य के जन्म के बाद से एक मजबूत आधार पाया है (जो कीनेसियन अर्थशास्त्र से प्रेरित था)। कल्याणकारी राज्य नीतियों को अपनाने के तीन दशकों बाद, पश्चिमी दुनिया ने अभूतपूर्व आर्थिक विकास का अनुभव किया जहाँ उदार लोकतांत्रिक राजनीति और पूँजीवादी बाजार एक साथ बढ़े। उदार लोकतंत्र और पूँजीवाद के सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व के बारे में हमेशा संदेह रहा। बैरिंगटन मूर के अनुसार, औद्योगिक आधुनिकीकरण केलिए तीन ऐतिहासिक मार्ग हैं। पहला मार्ग ब्रिटेन और फ्रांस ने अपनाया, जहाँ पूँजीपति व्यपारीवाद को बढ़ावा देकर लोकतांत्रिक पूँजीवाद प्रमुखता से उभरा। जापान और जर्मनी ने जमींदार कुलीन तंत्र की मदद से दूसरा मार्ग अपनाया जिससे पूँजीवाद की एक ऐसी प्रणाली का जन्म हुआ जो सैन्य अभिजात वर्ग क प्रभुत्व वाले सामंती अधिनायकवादी ढ़ांचे में संलग्न था। रूस ने राज्य द्वारा नियंत्रित औद्योगिक अर्थव्यवस्था के साथ–साथ एक सत्तावादी कम्युनिस्ट शासन को चुना। इसलिए मूर ने ये निष्कर्ष निकाला कि उन्नीसवीं सदी में उभरते लोकतंत्र की एक नियत विशेषता पूँजीवाद है। रॉबर्ट डाहल ने भी कहा कि 'यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आधुनिक लोकतांत्रिक संस्थान मुख्य रूप से निजी स्वामित्व वाले,बाजार उन्मुख

अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों या पूँजीवादी देशों में ही मौजूद हैं जिस नाम को आप पसंद करें'। पीटर बर्गर ने अपनी पुस्तक दी कैपिटलिस्ट रेवोल्यूशन(1986) में पूँजीवाद और लोकतंत्र के संबंधों पर चार प्रस्तावों पर चर्चा की है जो मुख्य रूप से दोनों के बीच संबंधों के सकारात्मक स्वरूप की व्याख्या करते हैं। दूसरी ओर, दोनों के बीच परस्पर विरोधी संबंध हैं। उदाहरण के लिए, फ्रेडरिक वॉन हायकिन ने अपने बाद के वर्षों में आर्थिक स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा में लोकतंत्र को खत्म करने की वकालत की। जॉन स्टर्ट मिल ने ऐसा ही दृष्टिकोण अपनाते हुए कहा कि पूँजीवाद ने लोकतंत्र का नाश कर दिया। इसलिए, उन्होंने एक कम प्रतिस्पर्धी और अंततः एक समाजवादी समाज की कल्पना की। मिल बाजार की अर्थव्यवस्था और प्रमुख राजनीति दोनों की ज्यादतियों को उपभोक्ताओं और उत्पादकों, नागरिकों और राजनेताओं की शिक्षा द्वारा नियंत्रित करना चाहते थे, जो कि नैतिक रूप से बेहतर मुक्त बाजार और लोकतांत्रिक सुव्यवस्था बनाने के हित में होते। थॉमस जेफरसन ने धन–सम्पत्ति में अर्थपूर्ण असमानताओं पर आपत्ति नहीं जताई किन्तु उनका मानना था कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र नागरिकता स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए आवश्यक थी। इसी प्रकार मार्क्स भी बताते हें कि कैसे मुक्त भूमि/संसाधनों तक पहुँच के लिए पूँजीवादी प्रभुत्व और श्रम का शोषण एक बाधा के रूप में कार्य करता है। दूसरे शब्दों में, जब आर्थिक संसाधनों/शक्तियों को समान रूप से वितरित किया जाता है और सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाता है तो यह पूँजीवाद पर एक नियंत्रण के रूप में कार्य करता है। गैब्रियल एल्मंड लोकतंत्र और पूँजीवाद के बीच बातचीत के विभिन्न आयामों पर चर्चा करते हैं। वह चार व्यापक प्रकार के अंतर संबंधों की पहचान करते हैं:

1) पूँजीवाद का लोकतंत्र को समर्थन,

2) पूँजीवाद का लोकतंत्र का नाश करना या उसको पलट देना,

3) लोकतंत्र का पूँजीवाद का नाश करना, तथा

4) लोकतंत्र का पूँजीवाद को प्रोत्साहन देना (एल्मंड, 1991)।

इस बात को जानना बहुत आवश्यक है कि लोकतंत्र और पूँजीवाद दोनों सकारात्मक और नकारात्मक रूप से एक दूसरे से संबंधित हैं, वे एक दूसरे को प्रोत्साहन भी देते हैं और विनाश भी करते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोटः 1) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।
2) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) लोकतंत्र और पूँजीवाद एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 प्रतियोगिता, तर्क–वितर्क और पूंजीवाद और उदारवादी लोकतंत्र का भविश्य

उन्नीसवीं शताब्दी में आधुनिकता और औद्योगिक पूँजीवाद की छाया में उदार लोकतंत्र का जन्म हुआ, जो बाद में एक वैश्विक घटना बन गई और इसे ऐतिहासिक रूप से स्थापित कर सामाजिक रूप दिया गया। पूर्वव्यापी और दूरदर्शी आज के संदर्भ में पूछे जाने वाले प्रश्न हैं,

1) एक उदार समाज (एक ऐसा समाज जो नागरिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता की गारंटी देता हे, मताधिकार का विस्तार, आवधिक चनाव) पूँजीवाद के निर्वाह और संरक्षण के लिए एक पूर्व शर्त है? तथा

2) क्या इस प्रकार का उदारवादी लोकतांत्रिक विस्तार पूँजीवादी हितों, संस्थानों और संपत्ति संबंधित के साथ है? वैकल्पिक रूप से, इलियट के शब्दों में कहें तो, क्या लोकतांत्रिक राजनीति में कामकाजी जनता द्वारा अधिक से अधिक भागीदारी अर्थव्यवस्था के बाजार आधारित पूँजीवादी व्यवस्था की संभावित पूर्ववत हो सकता है?(1987)।

आज विश्व स्तर पर उदार लोकतंत्र और पूँजीवाद के विकास पर फिर से विचार किया जा रहा है, दुनिया अकल्पनीय समस्याओं और मुद्दों में फंस गई है। अभूतपूर्व तकनीकी और भौतिक प्रगति पूँजीवादी व्यवस्था का एक परिणाम है, लेकिन इसने होने और न होने के बीच एक अकल्पनीय खाई पैदा कर दी है, आर्थिक स्थितियों में अत्यावश्यक दबाव के कारण समूदायों में बढ़ते तनाव, बढ़ते आतंकवाद, बढ़ती बेरोजगारी और सबसे महत्वपूर्ण स्वयं की इच्छा और अव्यवस्थित व्यक्तिों में वृद्धि। फुकुयामा की थीसिस 'एंड ऑफ हिस्ट्री' में इन समकालीन चुनौतियों के सामने उदार लोकतंत्र की जीत हुई, यह विचित्र है। बल्कि इतिहास में त्वरण हुआ है। रॉबर्ट डी कपलान अपने भविष्यसूचक लेख 'द कमिंग एनार्कि' में बताते हैं कि अभाव, अपराध, अधिक आबादी, जनजातीयता और बिमारियाँ तेज़ी से हमारे ग्रह के सामाजिक ताने–बाने को नष्ट कर रहे हैं। आज जो बुनियादी मुद्दा है जिससे मनुष्यों गुज़र रहा है, वो है अपवाद और असमानता की पराकाष्ठा। इसाबेल वी.सॉहिल ने अपने लेख 'कैपिटलिज़म एंड दी फ्यूचर ऑफ डेमोक्रेसी' के प्रारंभ की अकाट्य टिप्पणी में कहती हैं 'अमरीका एक खिचड़ी है। कई अन्य पश्चिमी राष्ट्र भी। लोकप्रियतावाद बढ़ रहा है क्योंकि हमारे बाजार पर आधारित मौजूदा उदार लोकतांत्रिक प्रणाली हमारे नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कम उत्पादन कर रहे हैं।' वे अमरीकी समाज के संदर्भ में परस्पर संबंधित समस्या पर चर्चा कर रही हैं किन्तु उनके तर्क की प्रासंगिकता वैश्विक है। उदाहरण के लिए, कुछ वैश्विक समास्याओं की प्रकृति आर्थिक होती है जैसे बढ़ती असमानताएँ, स्थिर वेतनमान, रोजगार की कमी, पीढ़ियों के बीच की गतिशीलता में कमी, स्वास्थ्य और शिक्षा के निराशाजनक स्तर, सार्वजनिक और निजी ऋण के बढ़ते स्तर, स्थान आधारित असमानताएँ। कुछ अन्य समस्याओं की प्रकृति राजनीतिक होती हैं जैसे कि अति–पक्षपात, प्रभावपूर्ण खरीद और भ्रष्टाचार का उच्चतम स्तर, पक्षाघात और सरकार पर विश्वास में गिरावट। और अंततः कुछ मुद्दे सांस्कृतिक होते हैं जैसे कि, प्रवासियों की नाराजगी तथा नस्ल/जातीय पहचान और लिंग पर बढ़ता तनाव। इन समास्याओं का विभक्त रूप से समाधान नहीं किया जा सकता।

वैश्विक स्तर पर इन आसन्न मुद्दों में जो योगदान दिया गया वह मानसिकता है, जो यह मानती है कि बाजार काम करते हैं परन्तु सरकारें नहीं और सरकारों को बाजारों के काम करने के लिए एक वातावरण बनाना होगा। अधिकांश आधुनिक समाजों में तीन क्षेत्र होते हैं : राज्य, बाजार और नागरिक समाज। अधिकांश राजनीतिक दर्शनों का इन तीनों क्षेत्रों में से एक की ओर निहित पूर्वाग्रह होता है। जहाँ समाजवादियों का झुकाव राज्य की ओर होता है, पूँजीवादी मुक्त बाज़ारों में विश्वास रखते हैं। पूँजीवाद का एक सौम्य संस्करण, जिसको हम उदार लोकतंत्र या मिश्रित–अर्थव्यवस्था मॉडल कहते हैं, बाज़ारों के महत्व को स्वीकार करता हैं, लेकिन सरकार की बाजार की विफलताओं को सही करने और वितरण संबंधी सवालों के समाधान की आवश्यकता को भी पहचानता है। इस प्रकार की 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' द्वितीस विश्व युद्ध के बाद से यू.एस. में प्रचलित रही और जिसमें विश्व के कई नेताओं ने महारथ हासिल की (सॉहिल, 2020)। हार्वर्ड के प्रोफेसर माइकल सैंडल का कहना है कि यू.एस. बाजार की अर्थव्यवस्था से निकल कर धीरे–धीरे बाजार के समाज की ओर बढ़ रहा है; यह कहना उचित होगा कि अमरीका के साझा नागरिक जीवन का अनुभव इस बात पर निर्भर करता हे कि उनके पास कितना पैसा है। बाजार अर्थव्यवस्था और बाजार समाजों ने सब कुछ बिक्री योग्य चीजों में बदल दिया है। (माइकल सैंडल की किताब 'व्हॉट मनी कान्ट बाय?' देखें) उदार लोकतांत्रिक पूँजीवाद के विजयी मार्च ने दुनिया भर में राजनेताओं (जैसे बर्नी सैंडर्स आदि) की एक नस्ल को काफी हद तक उभारा है, जिन्होंने आज इस प्रणाली के अभ्यास और इरादों पर प्रश्न उठाया है। दुनिया भर में अकल्पनीय और बढती असमानताओं के मुद्दों से लड़ने और संबोधित करने के लिए समाजवाद में रूचि पुनर्जीवित होती प्रतीत होती है। थॉमस पिकेटी ने अपनी पुस्तक 'कैपिटल इन दी ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरी(2013)' में तर्क दिया है कि विकसित देशों में पूँजी वापसी की दर लगातार आर्थिक विकास की दर से अधिक रह रही है और इससे भविष्य में धन–संपत्ति की असमानता बढ़ेगी। इस समस्या के समाधान के लिए, पिकेटी ने धन पर प्रगतिशील वैश्विक कर के माध्यम से पुनर्वितरण का प्रस्ताव रखा। हालांकि इस प्रकार के प्रस्तावों का राजनीतिक औचित्य कमजोर है, तथ्य यह है कि इस पर भी चर्चा की जा रही है, अब मुद्दा यह है कि हम दर्शन और इसके विकल्पों के रूप में बाजार पूँजीवाद के बीच लडाई में एक टिपिंग बिंदु के पास हो सकते हैं।

उदार लोकतांत्रिक ओर पूँजीवादी दुनिया की व्यवस्था को उस प्रस्ताव को फिर से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है जब बाजार सरकार/राजनीतिक प्रणाली द्वारा पूरक होते हैं। बढ़ती असमानताएँ राजनीतिक व्यवस्था से बाजार के प्रसार पर पर्दा डालने के लिए तत्काल ध्यान आकर्षित करती है। आज पलि से कहीं अधिक अर्थिक शक्ति राजनीतिक शक्ति बन गई है जबकि नागरिकों से लगभग पूरी तरह से उनके लोकतांत्रिक सुरक्षा और राजनीतिक अर्थव्यवस्था के हितों पर प्रभाव डालने की उनकी क्षमता छीन ली गई है तथा पूँजी स्वामियों से अतुल्नीय मांग करते हैं। वास्तव में, 1970 के दशक से लोकतांत्रिक–पूँजीवादी संकट के क्रम को देखते हुए, कोई भी किसी नए के होने की संभावना से डर नहीं सकता है, हालाँकि, अस्थायी पूँजीवाद में सामाजिक संघर्ष का समाधान इस बार पूर्ण रूप से अचित वर्गों के पक्ष में है जो अब उनके राजनीतिक रूप से असंवैधानिक संस्थागत गढ़, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय उद्योग में मजबूती से जमे हुए हैं (स्ट्रीक,

2011)। यह मानना बहुत ही आशावादी और हास्यास्पद होगा कि उदार लोकतंत्र लोगों की बाते सुनने के लिए जगह बनाता है। मार्टिन गिलेंस और बेंजामिन पेज के अनुभवजन्य अध्ययन से पता चलता है कि अर्थिक संभ्रांत वर्ग और संगठित व्यापारिक हितों का एक बड़ा प्रभाव हे, जबकि औसत नागरिक का वास्तव में कोई प्रभाव नहीं है। मध्यम वर्ग के मतदाता का लोकतांत्रिक प्रणाली में विधायी निर्णयों पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। यह उदार लोकतंत्र की एक बहुत ही तिरस्कारपूर्ण आलोचना है क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुनिश्चित करने में विफल रहता है और लोकतांत्रिक स्थान अंततः निजी/व्यावसायिक हित से अपहृत है।

दूसरी ओर, इस तथ्य पर भी विचार करना आवश्यक है कि इस अत्यंत उदार लोकतांत्रिक स्थान ने वैकल्पिक राजनीति को सबसे आगे आने का मौका दिया। दुनिया भर में, हम असमानता, नस्लीय/जातीस भेदभाव, लिंग आधारित उत्पीड़न आदि के खिलाफ लोगों की भीड़ में वृद्धि देखते हैं। यह उम्मीद की एक किरण है कि लोकतंत्र अभी भी वैकल्पिक राजनीति के साथ–साथ अर्थशास्त्र के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान दे सकता है। इसाबेल ने बाजार पूँजीवाद द्वारा अपहृत किए जा रहे उदार लोकतंत्रों से दुनिया को बचाने के लिए तीन संभावित विकल्पों पर चर्चा की। वे लोकतांत्रिक समाजवाद (अर्थव्यवस्था में सरकार का हस्तक्षेप), लोकतांत्रिक उदारवाद (मिश्रित अर्थव्यवस्था) और सामाजिक पूँजीवाद (सामाजिक पूँजी और विश्वास का नवीकरण) हैं। ये विकल्प एक आसन्न समस्या के प्रभावी समाधान की पेशकश कर सकते है जो अन्य सभी अंतर्संबंधित समस्याओं की जड़ में हैं, अर्थात असमानता। विलियम गैल्स्टन के शब्दों में : 'यह अकारण है कि एक निश्चित बिंदु से परे आर्थिक असमानता उदार लोकतंत्र के लिए खतरा है'(2018, पृ.135)।

बोध प्रश्न 3

नोटः 1) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।
2) अपने उत्तर के सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) समकालीन समय में पूँजीवादी विकास से उत्पन्न कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं और मुद्दों की सूची बनाएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 सारांश

जैसा कि हमने इस इकाई में देखा, आधुनिक समय, उदार लोकतंत्र और पूंजीवाद के दो सम्पन्न विचारों ने दुनिया भर में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। प्राचीन यूनान में लोकतंत्र के आरंभ के बाद से, लोगों के अधिकारों के विचार

से जुड़े अर्थ के विस्तार के साथ राजनीतिक मामलों में लोगों की भागीदारी का विचार विकसित हुआ। अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति की शरूआत ने उदार लोकतंत्र के विकास में योगदान दिया या यह भी कहा जा सकता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक थे। युद्ध के बाद के वर्षों में कल्याणकारी राज्य का उदय उदार लोकतंत्र और निहित पूंजीवाद के बीच एक समझौता था। हालाँकि, 1970 के बाद से वित्तीय संकट ने आर्थिक क्षेत्र और राजनीतिक क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में होने वाले बदलाव में बहुत योगदान दिया है। वैश्विक वित्तीय पूंजीवाद के बढ़ते प्रभाव ने उदार लोकतंत्र की भावना का त्याग कर दिया और अकल्पनीय असमानताओं का कारण बना। इसलिए, ये विचार बाज़ार अर्थव्यवस्था के बाज़ार समाज में परिवर्तित होने को रोकने के लिए फिर से आ खड़े हुए हैं। लोगों, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं का लोकतांत्रिक भावना में ये विश्वास है कि लोगों की बढ़ती आवाज़ के साथ पूंजीवादी प्रवृत्तियों को यर्थाथ की जाँच के तहत रखा जा सकता है।

6.7 संदर्भ

एल्मंड, जी.ए.(1991). कैपिटलिज़म एंड डेमोक्रेसी. पीएसः पॉलिटिकल साइंस एंड पॉलिटिक्स, 24(3), 467–474।

ढ़ल, आर.ए. (2008). डेमोक्रेसी एंड इटस् क्रिटिक्स. येल युनिवर्सिटि प्रेस।

एलिओट, जे.ई, एंड स्कॉट, जे.वी.(1987). थ्योरीज़ ऑफ लिब्रल कैपिटलिस्ट डेमोक्रेसीः आल्टर्नेटिव पर्सपेक्टिवज़, इंटरनेश्नल जरनल ऑफ सोशल इकोनोमिक्स।

गॉल्स्टन, विलियम. (2018). एंटी–प्लूलरिज़मःदी पॉपूलिस्ट थ्रेट टु लिब्रल डेमोक्रेसी, न्यू हैवन, सीटीः येल युनिवर्सिटि प्रेस।

इवर्सन, टी. (2006). कैपिटलिज़म एंड डेमोक्रेसी. इन दी ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल साइंस।

मर्केल. डब्ल्यू. (2014). इज़ कैपिटलिज़म कम्पैटिबल विद डेमोक्रेसी? ZeitschriftfürvergleichendePolitikwissenschaft, 8(2), 109–128।

ओ'सुलिवान, एम. (2005). टाइपोलोजीज़, आइडियोलोजीज़ एंड रीएलिटिज़ ऑफ कैपिटलिज़म. सोशियो इकोनोमिक रिव्यू, 3(3), 547–558।

पिकेटी, टी. (2015). अबाउट कैपिटल इन दी ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरी. अमेरिकन इकोनोमिक रिव्यू, 105(5), 48–53।

सौहिल, आई. (2020). कैपिटलिज़म एंड दी फ्यूचर ऑफ डेमोक्रेसी. इन कम्युनिटी वैल्थ बिल्डिंग एंड दी रीकंस्ट्रक्शन ऑफ अमेरिकन डेमोक्रेसी. एडवर्ड एल्गर पब्लिशिंग।

शमिटर, पी.सी.(1995). डेमोक्रेसीज़ फ्यूचरः मोर लिब्रल, प्री लिब्रल ऑर पोस्ट लिब्रल? जरनल ऑफ डेमोक्रेसी, 6(1), 15–22।

स्कॉट, बी.आर.(2006). दी पॉलिटिकल इकोनोमी ऑफ कैपिटलिज़्म. हार्वर्ड बिज़नस स्कूल वर्किंग पेपर, न. 07–037।

स्ट्रीक, डब्ल्यू. (2011). दी क्राइसिस इन कॉनटक्स्टः डेमोक्रेटिक कैपिटलिज़्म एंड इटस् कॉन्ट्राडिक्शनस्. मैक्स–प्लैंक– InstitutfürGesellschaftsforschung डिस्कशन पेपर, (11/15)।

वेयर, ए. (1992). लिब्रल डेमोक्रेसीः वन फार्म ऑर मैनी? पॉलिटिकल स्टडीज़, 40(1), 130–145।

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पूँजीवाद को पनपने के लिए संसाधनों के निजी स्वामित्व, उत्पादन ओर वितरण की तर्कसंगत तकनीक, मुक्त बाज़ार, मुक्त श्रम बल, अर्थव्यवस्था का व्यावसायीकरण और तर्कसंगत कानून जैसी स्थितियों की आवश्यकता होती है।

2) डी

बोध प्रश्न 2

1) अपने उत्तर में निम्नलिखित तीन पहलू शामिल करें: i) उदार लोकतंत्र पूँजीवाद के लिए एक पूर्व शर्त है। ii) उदारवादी लोकतंत्र पर पूँजीवादी इरादे और संस्थाओं का प्रभाव, तथा पूँजीवादी व्यवस्था में सेंध लगाने के लिए लोकतांत्रिक भावना का स्थान।

बोध प्रश्न 3

प) पूँजीवाद ने अभूतपूर्व तकनीकी और भौतिक प्रगति का कारण बना, किन्तु इसने न केवल होने और न होने के बीच अकल्पनीय खाई पैदा की, बल्कि जलवायु परिवर्तन, समुदायों के बीच तनाव, आंतकवाद, बेरोजगारी तथा स्व–इच्छुक और सूक्ष्मवादी व्यक्ति के विकास जैसी स्थितियाँ भी पैदा कर दी।